

## test

01 January 1990, Monday  
01:00:00 AM(5.5)  
New Delhi, India

रेखांश : 77.12E  
अक्षांश : 28.36N  
साम्पातिक काल : 7:19:34  
स्थानीय मानक समय : 00:38:48  
अयनांश : 23.72 एन सी लाहिरी

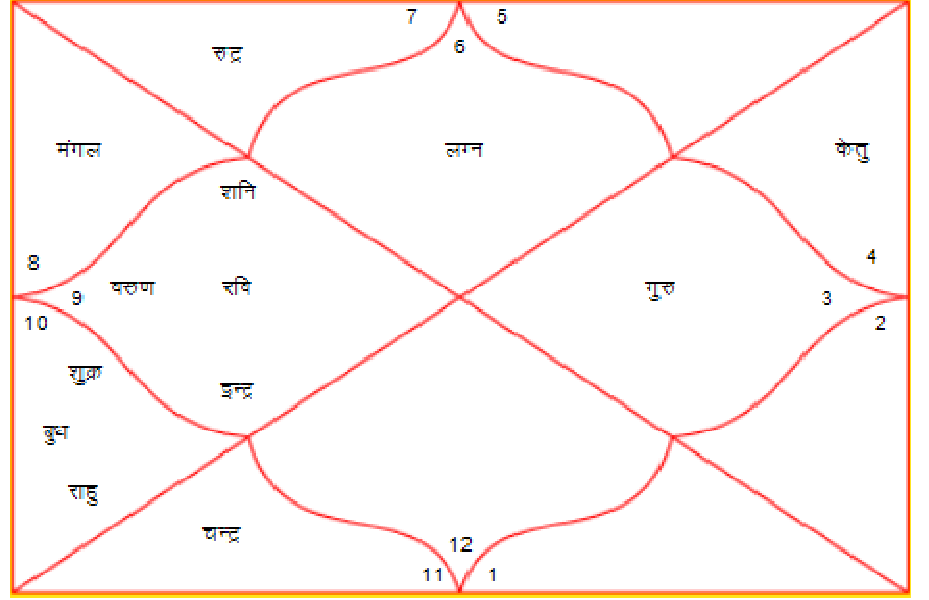
लग्न : कन्या  
लग्नपति : बुध  
राशी : कुम्भ  
राशी स्वामी : शनि  
नक्षत्र : धनिष्ठा  
नक्षत्र स्वामी : मंगल  
चरण : 2

नाड़ी : मध्य  
नाड़ी पद : आदि

तिथि : चतुर्थी शुक्ल  
पाया : स्वर्ण  
सूर्य सिद्धांत योग : वज्र

करण : विष्टि  
वर्ण : शूद्र  
वर्ण : शूद्र  
वश्य : जलचर  
योनि : सिंह(स्त्री.)  
विहग : वायस  
गण : राक्षस  
प्रथम अक्षर : ग, गी, गू, गे  
सूर्य राशि : धनु

## लग्न कुण्डली



## जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशी	स्वामी	डिग्री	नक्षत्र-पद	स्वामी
लग्न		कन्या	बुध	23:46:34	चित्रा-1	मंगल
रवि	मार्गी	धनु	गुरु	16:23:45	पूर्वाषाढा-1	शुक्र
बुध	वक्री	मकर	शनि	2:6:43	उत्तराषाढ-2	रवि
शुक्र	वक्री	मकर	शनि	12:35:5	श्रवण-1	चन्द्र
मंगल	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	15:47:57	अनुराधा-4	शनि
गुरु	वक्री	मिथुन	बुध	11:31:28	अरिद्रा-2	राहु
शनि	मार्गी	धनु	गुरु	21:51:34	पूर्वाषाढा-3	शुक्र
चन्द्र	मार्गी	कुम्भ	शनि	0:19:41	धनिष्ठा-3	मंगल
राहु	वक्री	मकर	शनि	24:45:17	धनिष्ठा-1	मंगल
केतु	वक्री	कर्क	चन्द्र	24:45:17	आश्लेषा-3	बुध
इन्द्र	मार्गी	धनु	गुरु	12:1:38	मूला-4	केतु
वरुण	मार्गी	धनु	गुरु	18:17:43	पूर्वाषाढा-2	शुक्र
रुद्र	मार्गी	तुला	शुक्र	23:21:27	विशाखा-2	गुरु

## ज्योतिष से आपका स्वास्थ्य



जन्मकुण्डली किसी भी व्यक्ति के जीवन का आईना होती है जिसमें उसके जीवन के हर भाग का प्रतिबिम्ब मिलता है. स्वास्थ्य के लिये जन्मकुण्डली के आंकलन के द्वारा यह जाना जा सकता है कि किसी व्यक्ति को किन-किन स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है. इस रिपोर्ट में आपको अपनी कुण्डली में बन रहे योगों का आपके स्वास्थ्य पर हो रहे प्रभाव का आंकलन मिलेगा.



## ज्योतिष से आपका स्वास्थ्य

प्राचीन समय से ही ज्योतिष का संबंध स्वास्थ्य से जुड़ा रहा है। प्राचीन शास्त्रों में चिकित्सक का कार्य ज्योतिषियों द्वारा ही सम्पन्न किया जाता था। प्राचीन ग्रंथों में ज्योतिष की अनेकों शाखाएँ मिलती हैं, जिनमें आयुर्वेद का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में त्रिदोषों का वर्णन मिलता है। यह त्रिदोष वात, पित्त तथा कफ होते हैं। यह त्रिदोष किसी ना किसी ग्रह के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। जैसे सूर्य तथा मंगल पित्त प्रकृति के ग्रह हैं। बुध ग्रह में तीनों दोष – वात, पित्त तथा कफ पाए जाते हैं। चन्द्रमा में कफ की मात्रा अधिक होती है। इसमें कुछ मात्रा वात की भी पाई जाती है। गुरु ग्रह कफ प्रकृति का ग्रह है। शुक्र वात तथा कफ दोनों प्रकृति का ग्रह है। शनि ग्रह में वात दोष पाया जाता है।

जातक की कुण्डली में जो ग्रह कमजोर होगा अथवा जिस ग्रह पर पाप ग्रहों का प्रभाव अधिक होगा, उसे उस ग्रह से संबंधित दोष से प्रभावित रोगों का सामना जीवन में अधिक करना पड़ेगा। जैसे किसी व्यक्ति की कुण्डली में चन्द्रमा कमजोर है तो उसे कफ तथा कफ से जुड़े विकारों का सामना अधिक करना पड़ेगा।

प्राचीन समय में व्यक्ति ज्योतिषीय सलाह से ही औषधि का सेवन आरम्भ करता था। एक अच्छा ज्योतिषी उसे दवा लेने का समय तथा तरीका बताए था। आज आधुनिक समय में आयुर्वेद में बहुत सी ऐसी औषधियाँ हैं जिन्हें लेने का एक निश्चित समय तथा तरीका होता है। जिन्हें आयुर्वेद पद्धति के बहुत से ज्ञाता उपयोग में लाते हैं।

ज्योतिष की सहायता से व्यक्ति विशेष को होने वाली बीमारियों का पता समय से लग सकता है। इन बीमारियों का ईलाज वह समय पर कराकर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ पा सकता है। कई बार चिकित्सक को रोगी के रोग का पता देर से लगता है। ऐसे में एक कुशल ज्योतिषी कुण्डली की सही जाँच करके उचित मार्गदर्शन कर सकता है। वह बीमारी का क्षेत्र तथा स्वरूप बताने में सहायता कर सकता है।

## लग्न का आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव

व्यक्ति विशेष की कुण्डली में लग्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि लग्न कमजोर है तो व्यक्ति किसी भी कार्य में सफलता हासिल नहीं कर पाएगा। यदि व्यक्ति विशेष की कुण्डली में लग्न पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव है अथवा लग्न किन्हीं भी अन्य कारणों से पीड़ित है, तब उसे जीवन में शारीरिक अथवा मानसिक कष्टों का सामना करते रहना पड़ेगा। उसके शरीर में कोई ना कोई रोग लगा ही रहेगा।

यदि व्यक्ति विशेष की कुण्डली में लग्न बली अवस्था में स्थित है तब वह जीवन भर स्वस्थ रहता है। उसमें शारीरिक तथा मानसिक बल की कमी बिलकुल भी नहीं होती। शरीर में चुस्ती-फुर्ती बनी रहती है। अच्छे स्वास्थ्य के परिणामस्वरूप, जीवन के आधे संघर्षों को तो वह ऐसे ही पार कर लेता है। इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए लग्न का बली होना आवश्यक है।

## लग्न राशी

सभी बारह राशियों की अपनी बहुत सी विशेषताएँ होती हैं। कुछ राशियों में रोगों से लड़ने प्रतिरोधक क्षमता मौजूद होती है तो कुछ में नहीं होती है। स्वास्थ्य के संबंध में कोई राशि नैसर्गिक रूप से बली तो कोई निर्बल होती है। कोई सम होती है।



आपकी जन्म कुण्डली के लग्न में कन्या राशि निर्बल अवस्था में स्थित है। कन्या राशि के लग्न भाव में निर्बल होने से आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करते रहना पड़ सकता है। आपको छोटी अवधि के रोग भी लम्बे समय तक घेरे रह सकते हैं। आपको जटिल समस्याएँ समस्याएँ कम होंगी। लेकिन आप छोटे रोगों से लम्बे समय तक घिरे रहने के कारण मानसिक तथा शारीरिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

आपको गुप्त रोगों से परेशानी हो सकती है। आप पाचन संबंधी परेशानियों से घिरे रह सकते हैं। कमर से जुड़ी व्याधियाँ परेशानी का कारण बन सकती है। कन्या राशि के अधिकार क्षेत्र में पेट, मलभाग तथा पाचन भाग आते हैं। इस कारण आपकी कुण्डली के लग्न में कन्या राशि के कमजोर होने से आपको इन क्षेत्रों से संबंधित परेशानियों का सामना समय-समय पर करना पड़ सकता है। आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। समय पर चिकित्सक से सलाह लेने पर आपकी बीमारी शीघ्र ही ठीक हो जाएगी।

### लग्न भाव का आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव

लग्न भाव आपका कमजोर है अतः सेहत के मामले में आपको अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। सेहत के प्रति लापरवाही करेंगे तो स्वास्थ्य सुख में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। शारीरिक तौर पर आप थोड़े कमजोर हो सकते हैं। मौसम के बदले मिजाज का आपकी सेहत पर जल्दी असर हो सकता है। स्वास्थ्य को लेकर चिंताएँ बनी रहेंगी और इन पर खर्च भी करना पड़ सकता है।

### लग्नेश का आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव

आपकी कुण्डली में लग्नेश बलवान है। लग्नेश के बली होने से स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होने की संभावना है। सेहत की दृष्टि से आपको खान-पान में अधिक परहेज करने की आवश्यकता नहीं होगी। आपके शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता अधिक होगी जिससे आप जल्दी बीमार नहीं होंगे। छोटी-मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी को आप गंभीरता से नहीं लेंगे।

### निष्कर्ष

लग्न, लग्नेश एवं लग्नेश जिस भाव में स्थित है उनका विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि आपकी सेहत सामान्य रूप से ठीक-ठाक रहेगी। जब कभी बीमार होंगे तब उचित चिकित्सा से स्वास्थ्य लाभ मिल जाएगा। चिकित्सा के दौरान चिकित्सक जो भी परहेज बताएं उनका पालन करना चाहिए।

### भावों में ग्रहों की स्थिति का स्वास्थ्य पर प्रभाव

कुण्डली में ग्रह की जैसी स्थिति होती है उसी अनुरूप ग्रह अपना फल देते हैं। कुण्डली में ग्रह बलवान हों तो उनसे प्राप्त होने वाले फल व्यक्ति के लिए शुभ फलदायी होते हैं। जबकि, ग्रह कमजोर होने पर उनका शुभ फल व्यक्ति को नहीं मिल पाता है। इस स्थिति में व्यक्ति को बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

### रवि



आपकी कुण्डली में चौथे भाव में सूर्य बलवान अवस्था में बैठा है. इसका शुभ प्रभाव है कि आपके शरीर में रोगों से लड़ने की अच्छी क्षमता होगी अतः जल्दी आप बीमार नहीं होंगे. जब कभी भी बीमार भी होंगे तो रोग अधिक समय तक आप पर हावी नहीं रहेगा यानी आपको जल्दी स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है. आपकी हड्डियां मजबूत होंगी. छाती के रोग होने की संभावना कम रहेगी.

कभी-कभी आपका रक्तचाप बढ़ सकता है. इससे बचने के लिए क्रोध पर काबू रखें और अपने व्यवहार में नरमी लाएं.

### बुध

बुध आपकी कुण्डली में पंचम भाव में कमजोर अवस्था में बैठा है. बुध की इस स्थिति से स्वास्थ्य के विषय में आपको शुभ फल प्राप्त होगा. वायु विकार, सर्दी-खांसी एवं कफ की शिकायत होने की संभावना कम है. शरीर और पेट में पित्त के प्रभाव के कारण होने वाली बीमारियों से भी आमतौर पर आप बचे रहेंगे. तंत्रिका तंत्र से जुड़ी परेशानियों का आपको सामना नहीं करना होगा.

आपका लीवर स्वस्थ रहेगा जिससे पाचन क्षमता अच्छी हो सकती है. आप बहुत ही बुद्धिमान होंगे. आपमें किसी विषय को जल्दी याद करने और लम्बे समय तक स्मरण में बनाये रखने की योग्यता होगी.

### शुक्र

शुक्र आपकी कुण्डली में पंचम भाव में मजबूत स्थिति में है. यह स्वास्थ्य की दृष्टि से कई मामलों में आपके लिए शुभ फलदायी होगा. आपका चेहरा दिखने में आकर्षक हो सकता है. आंत और अग्नाशय को स्वस्थ रखने में शुक्र सहयोगी होगा. इससे अपैन्डिसाइटिस (आंत्रपुच्छ) रोग होने की संभावना से आप मुक्त रह सकते हैं.

आपके हृदय और किडनी सुचारु रूप से कार्य करेंगे. शुक्र का शुभ प्रभाव यह भी है कि आपको हार्मोन्स में असंतुलन के कारण होने वाली परेशानियों का सामना नहीं करना होगा. आप जीवनसाथी के प्रति वफादार रहें और मन एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण रखें तो यौन रोग से मुक्त रह सकते हैं.

### मंगल

मंगल आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में कमजोर अवस्था में स्थित है. आप उर्जावान होंगे और साहसिक कार्यों में आपकी अधिक रुचि होगी. मंगल की इस स्थिति से आपकी सेहत भी अच्छी रहेगी. जब कभी भी बीमार होंगे तो सामान्य उपचार से आपको स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है. कंधे मांसल होंगे. कंधे और भोजन नलिका से सम्बन्धित परेशानियों का आपको सामना नहीं करना होगा. आप दृढ़ इच्छा शक्ति वाले व्यक्ति होंगे.

### गुरु

आपकी कुण्डली में गुरु कमजोर होकर दशम भाव में स्थित है. इस योग के प्रभाव से आपके नेत्र रोगों



में ब्रद्धि हो सकती है. योग की अशुभता के कारण आप दूसरों के लिये कभी कभार अपमान जनक शब्दों का प्रयोग कर सकते है. आपा खोने पर आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव आ सकता है.

व गुरु का कमजोर होना आपके लिवर और किडनी के रोगों को प्रभावी कर सकता है. किसी भी रोग के होने पर आपको स्वास्थ्य सुख प्राप्त करने में सामान्य से अधिक समय लग सकता है. यह योग आपके रोगों में भी ब्रद्धि कर सकता है. गुरु इस भाव से आपको शरीर में दर्द और कानों की परेशानियों में ब्रद्धि करेगा. साथ ही यह आपमें भोजन में कम रुचि रहने कि प्रवृति का विकास कर सकता है.

### शनि

शनि आपकी कुण्डली में चतुर्थ भाव में बलवान अवस्था में बैठा है. यह आपकी सेहत के लिए अच्छी स्थिति है. संभावना है कि हड्डियों के जोड़ों से सम्बन्धित परेशानियों का आपको सामना नहीं करना होगा. आपकी मांसपेशियां पुष्ट होंगी जिससे शारीरिक तौर पर आप सुदृढ़ और मजबूत दिखेंगे.

शनि के शुभ प्रभाव से आपमें मेहनत करने की अच्छी क्षमता होगी. लम्बे समय तक कार्य करने पर भी आप शरीर में थकान महसूस नहीं करेंगे. तंत्रिका तंत्र सुचारू रूप से कार्य करेगा तथा शरीर में दर्द की अनुभूति कम होगी.

### चन्द्र

चन्द्रमा आपकी कुण्डली के छठे भाव में मजबूत अवस्था में बैठा हुआ है. स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव होने पर भी आपका मनोबल ऊँचा रहेगा. इससे धैर्य पूर्वक चिकित्सा करवा सकेंगे और दवाईयों का शीघ्र प्रभाव भी होगा जिससे जल्दी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेंगे. शरीर में जल की मात्रा संतुलित रहेगी. आपको आराम करना पसंद हो सकता है.

चन्द्र की इस स्थिति में आपको मानसिक चिंताओं का सामना करना पड़ सकता है. आँखों से जुड़ी परेशानियां आने की भी संभावना है. आपके लिए अच्छा होगा कि चिंताओं को अपने ऊपर हावी नहीं होने दें तथा आँखों को धूप, धूल से सुरक्षित रखें.

### राहु

आपकी कुण्डली में राहु पंचम भाव में बलवान अवस्था में बैठा है. आपकी बुद्धि प्रखर होगी. मस्तिष्क सम्बन्धी परेशानी होने की संभावना कम है. राहु के शुभ प्रभाव से रक्त एवं त्वचा सम्बन्धी रोग से आप मुक्त रह सकते हैं. आपके अंदर उत्साह और जोश भरपूर होगा. आप काफी फुर्तीले भी होंगे. वायु रोग होने की आशंका है अतः, वायु दोष बढ़ाने वाली चीजों से परहेज रखें.

### केतु

आपकी कुण्डली में केतु एकादश भाव में कमजोर अवस्था में है. केतु की यह स्थिति आपको हृदय रोग होने की संभावनाएं बना रही है. इसके फलस्वरूप कार्यो का दबाव होने पर आप रोगग्रस्त हो सकते हैं।



यह केतु आप पर मानसिक कष्टों को लाने की सम्भावनाएं बना रहा है.

इसके फलस्वरूप आपके हाथों में खुजली जैसी परेशानियां हो सकती है. इस योग के कारण आपको त्वचा संबन्धित विकार भी हो सकते हैं.

केतु के निर्बल होने के कारण कफ और जुकाम जैसे संक्रमण के रोगों के प्रभाव में आने के योग बन रहे हैं. मौसम बदलने पर स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं।

### आपकी कुण्डली में बीमारियों के योग

ज्योतिष में कुण्डली में बनने वाले योगों का विश्लेषण कर उन बीमारियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है जिनके होने की किसी व्यक्ति को संभावना है. अगर आपकी कुण्डली में किसी बीमारी के योग बनते हैं तो आपको उस रोग के प्रति सावधान रहना होगा और बचाव के उपाय करने होंगे.

लेकिन सिर्फ योग बनने का मतलब यह नहीं है कि आप को रोग होगा ही. योग की उपस्थिति उस रोग की संभावना ही व्यक्त करती है. कुण्डली में बनने वाले बाकी योगों और आपके द्वारा अपनी सेहत के बचाव के लिये किये गये उपायों के अनुसार ही आप उस रोग से ग्रसित होंगे.

#### एपेन्डिसाइटिस का योग

चन्द्रमा कन्या, वृश्चिक अथवा कुम्भ राशि में होने पर आंत्रपुच्छ रोग होने की संभावना रहती है. आपकी कुण्डली में भी इसी तरह की एक स्थिति बन रही है अतः आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए. खान-पान के मामले में सावधानी रखें, यह आपकी सेहत के लिए अच्छा रहेगा.

#### मानसिक बीमारी का योग

शनि एवं द्वितीयेश की युति सूर्य अथवा मंगल के साथ होने पर मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ है. आपकी कुण्डली में भी इसी तरह की स्थिति है जिससे ज्ञात होता है कि आप मानसिक उलझनों में घिरे रहेंगे. आपका मन अशांत रह सकता है.

#### कान से संबंधित बीमारी का योग

जन्मपत्री में तीसरे, ग्यारहवें, पांचवें या नवम भाव पर केवल पाप ग्रह की दृष्टि होने पर श्रवण शक्ति में कमी के योग बनते हैं. आपकी जन्मपत्री में भी इसी तरह के एक योग बन रहे हैं जिससे सुनने की क्षमता में कमी आने की संभावना बन रही है.

आपकी कुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है. राहु की इस स्थिति से आपको दांतों से सम्बन्धित किसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है.

कुण्डली में गुरु का सम्बन्ध छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव से बनने पर मधुमेह होने की संभावना बनती है. आपकी कुण्डली में भी इसी तरह की एक स्थिति बनी हुई है अतः आपको खान-पान में



संयम रखना चाहिए. योग एवं व्यायाम करना भी आपके लिए फायदेमंद हो सकता है. इस रोग के लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें इससे आपको फायदा होगा.

कुण्डली में पंचमेश की युति षष्ठेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश के साथ हो तब मधुमेह होने की संभावना रहती है. आपकी कुण्डली में पंचमेश इसी प्रकार की एक युति बना रहा है अतः आपको इस रोग के विषय में सावधान रहना चाहिए. अपने खान-पान में उन चीजों से परहेज रखें जिनसे यह रोग आप पर हावी हो सकता है.

कुण्डली में गुरु का सम्बन्ध छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव से बनने पर मधुमेह होने की संभावना बनती है. आपकी कुण्डली में भी इसी तरह की एक स्थिति बनी हुई है अतः आपको खान-पान में संयम रखना चाहिए. योग एवं व्यायाम करना भी आपके लिए फायदेमंद हो सकता है. इस रोग के लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें इससे आपको फायदा होगा.

कुण्डली में पंचमेश की युति षष्ठेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश के साथ हो तब मधुमेह होने की संभावना रहती है. आपकी कुण्डली में पंचमेश इसी प्रकार की एक युति बना रहा है अतः आपको इस रोग के विषय में सावधान रहना चाहिए. अपने खान-पान में उन चीजों से परहेज रखें जिनसे यह रोग आप पर हावी हो सकता है.

### हृदय रोग का योग

आपकी कुण्डली में सूर्य चतुर्थ भाव में षष्ठेश तथा पाप ग्रहों के साथ स्थित है. आपको खान-पान का ध्यान रखना होगा क्योंकि, कुण्डली में मौजूद इस स्थिति से हृदय रोग की संभावना बन रही है.

### हृदय रोग का योग

कुण्डली में चतुर्थ भाव या पंचम भाव का स्वामी पीड़ित हो अथवा इनके स्वामियों का सम्बन्ध अशुभ ग्रहों से हो तब हृदय रोग की संभावना बनती है. आपकी जन्मपत्री में भी इसी प्रकार की एक स्थिति बनी हुई है आपको अपनी सेहत के प्रति सजग रहना चाहिए. जिन चीजों से हृदय रोग हो सकता है उनसे परहेज रखें तो इस समस्या से बचाव हो सकता है.

### किडनी से संबंधित रोग का योग

आपकी कुण्डली में षष्ठम भाव एवं षष्ठेश पीड़ित है. कन्या राशि एवं शुक्र भी कमजोर अवस्था में है. संभावना है कि, आपको किडनी सम्बन्धी कोई समस्या हो सकती है.

### कृष्ठ या त्वचा से संबंधित रोग

लग्नेश, चन्द्र एवं बुध आपकी कुण्डली में राहु-केतु के अक्ष पर स्थित हैं. आपको चर्म रोग होने की संभावना है. अगर चिकित्सा में लापरवाही करेंगे तो रोग अधिक कष्टदायी हो सकता है.

### आंखों के रोग का योग

आपकी कुण्डली में षष्ठेश वक्री ग्रह की राशि में स्थित है. आपको अपनी आंखों का ध्यान रखना चाहिए.



जिन कार्यों में आंखों पर दबाव पड़ता हो उन कार्यों से आपको बचना चाहिए. इससे आंखों से सम्बन्धित परेशानियों में कमी आ सकती है.

### लकवा होने का योग

बुध आपका पीड़ित है एवं षष्ठेश और शनि का संबंध बन रहा है. आपको अधिक तनाव नहीं लेना चाहिए. यह आपको लकवे की संभावना से बचाएगा.

### लकवा होने का योग

लग्न व लग्नेश पीड़ित हो तथा चन्द्र एवं बुध का सम्बन्ध शनि अथवा राहु से बन रहा हो तब पक्षाघात होने की संभावना रहती है. आपकी कुण्डली में भी इस तरह की स्थिति है अतः आपको इस रोग के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए.

### रोग ग्रसित होने का योग

लग्नेश आपका कमजोर है और पंचम भाव में बैठा है. छोटी-मोटी स्वास्थ्य समस्याएं आपको हो सकती हैं.

### रोग ग्रसित होने का योग

चन्द्रमा आपका कमजोर है. इससे समय-समय पर आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, ऐसी संभावना है.

### त्वचा से संबंधित रोगा का योग

लग्नेश एवं बुध आपकी कुण्डली में राहु-केतु के अक्ष पर स्थित हैं. अपनी त्वचा की साफ-सफाई का ध्यान रखें. इसमें लापरवाही करेंगे तो त्वचा से सम्बन्धित कोई रोग आपको हो सकता है.

### अल्सर का योग

आपकी कुण्डली में केन्द्र भाव में दो से अधिक पाप ग्रह केन्द्र भाव में स्थित है अतः आपको सावधानी पूर्वक कार्य करने के साथ ही साथ सेहत के प्रति सजग रहना चाहिए. असावधानी से लापरवाही से शारीरिक कष्ट हो सकता है.

### अल्सर का योग

कुण्डली में चतुर्थेश छठे भाव में हो या षष्ठेश चतुर्थ भाव में बैठा हो तब शरीर के किसी अंग में चोट लगने की संभावना रहती है. आपकी कुण्डली में भी यह योग बन रहा है अतः आपको जोखिम लेकर कोई भी काम नहीं करना चाहिए. अपनी सुरक्षा का ध्यान सदैव रखें.

### अल्सर का योग

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा पर मंगल का प्रभाव है. इस योग के प्रभाव से आपको चोट लगने की अशंका बन रही है. अतः आपको जोखिम लेकर कोई भी काम नहीं करना चाहिए. अपनी सुरक्षा का ध्यान सदैव रखें





## अल्सर का योग

आपकी कुण्डली में चतुर्थ भाव पर मंगल का प्रभाव है अतः आपको चोट लगने की आशंका है. शारीरिक कष्ट भी आपको हो सकता है. सावधानी एवं सतर्कता से इनमें कमी लाने में आपको सफलता मिल सकती है.

## आपके लिये ज्योतिष द्वारा उपाय

ज्योतिष के अनुसार आप अपने जीवन में आने वाले बाधाओं और ग्रहों के दुष्प्रभाव में उपायों के द्वारा कमी कर सकते हैं. अगर उपाय सही तरह व पूरे विश्वास के साथ किये जायें तो वह ग्रहों को शुभ बनाने में बहुत मदद करते हैं.

आपकी कुण्डली में जो ग्रह पीड़ित हैं उनके लिये उपाय कर आप उन्हें अपने अनुकूल बना सकते हैं और उनके द्वारा डाली जाने वाली बाधाओं से बच सकते हैं. आगे सभी ग्रहों के लिये आसान उपाय दिये गये हैं जिन्हें आप खुद ही करके उन ग्रहों को अपने लिये शुभकारी बना सकते हैं. अंत में महा-मृत्युंजय मंत्र दिया गया है जिसका जाप आपको अपनी स्वास्थ्य समस्याओं से लड़ने में सहायता प्राप्त करेगा.

## सूर्य के लिये उपाय

(२) सूर्य संबंधी बीमारियों के निवारण के लिए आप सूर्य का आदित्य हृदय स्तोत्र पाठ कर सकते हैं . यह पाठ प्रतिदिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध आसन पर बैठकर करना चाहिए. पाठ करते समय आपका मुँह पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए. आप सूर्य से संबंधित किसी भी पाठ या जप को करते हैं तो शुक्ल पक्ष के रविवार से आरम्भ करें. सूर्योदय के समय स्नान आदि से निवृत्त होकर आप कोई भी जप या पाठ कर सकते हैं.

(३) इसके अतिरिक्त आप सूर्य के वैदिक मंत्र का जप कर सकते हैं. इस वैदिक मंत्र के जप की एक माला प्रतिदिन सुबह के समय स्नान आदि से निवृत्त होकर करने से आपको लाभ मिलेगा. आप एक माला प्रतिदिन तीन माह तक जप करें तो स्वयं परिवर्तन का अनुभव करेंगे। मंत्र है :-  
" ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्म मतं मर्त्यं च । हिरण्येन सवितारथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् । सूर्याय नमः ।"

(४) आप प्रतिदिन सूर्य को जल अर्पित करें. जल अर्पित करते समय " ॐ घृणि सूर्याय नमः " बोले. तत्पश्चात् सूर्य मंत्र " ॐ घृणिः सूर्यादित्योम " की एक माला जप करें. प्रतिदिन सुबह इस मंत्र का जप करने से आपकी बुद्धि, शारीरिक बल तथा मानसिक बल में वृद्धि होगी.

(५) आप सूर्य से संबंधित नवग्रह स्तोत्र में से सूर्य के मंत्र का जप कर सकते हैं. इस मंत्र का जप आप सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर करें. जप को आप शुक्ल पक्ष के रविवार से आरम्भ करें. मंत्र है :-  
" जपाकुसुम संकाशं काशपेयं महाद्युतिम । तमोरि सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम ।।" इस मंत्र की एक माला जप प्रतिदिन सुबह के समय करें। सूर्य के अशुभ प्रभाव इससे दूर होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी.

(६) सूर्य पिता व पिता समान व्यक्ति का कारक ग्रह होता है. इसलिए सूर्य के मंत्र जप के अतिरिक्त आप इनका आदर तथा मान-सम्मान करें. इससे सूर्य के अशुभ प्रभाव कम होंगे और शुभ फलों में वृद्धि



होगी. सूर्य प्रशासक अथवा उच्चाधिकारियों का भी कारक ग्रह होता है, इसलिए आप अपने उच्चाधिकारियों को अपने कार्य से संतुष्ट तथा खुश रखने की कोशिश करें.

(७) सूर्य देव को प्रसन्न करने के लिए आप विष्णु भगवान का पूजन रविवार के दिन करें. आप हरिवंश पुराण का पाठ भी रविवार के दिन करें. सूर्य मान-सम्मान का कारक ग्रह है. आप अपने मान-सम्मान में वृद्धि के लिए शुक्ल पक्ष के रविवार से व्रत आरम्भ कर सकते हैं अथवा आप रविवार के दिन नमक का त्याग करें. रविवार को आप भोजन में केवल मीठी चीजों का प्रयोग करें. नमक बिलकुल भी नहीं खाएं.

आप उपरोक्त उपाय में से अपनी सुविधानुसार कोई भी उपाय अपना सकते हैं.

### बुध के लिये उपाय

(२) बुध के शुभ फलों में वृद्धि करने के लिए आप बुध से सम्बंधित मंत्रों का जप कर सकते हैं. बुध मंत्र का जप शुक्ल पक्ष के बुधवार से आरम्भ करें. जप आरम्भ करने से पहले स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिए. स्वच्छ आसन पर बैठकर अपना मुँह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर करके मंत्र जप करें. बुध के पौराणिक मंत्र का आप जप कर सकते हैं. इस जप को करने से बुध ग्रह को बल मिलेगा. बुध से संबंधित विकारों में कमी आएगी. बुध का पौराणिक मंत्र है :- " प्रियंगुकलिका श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम ॥ "

(३) आप बुध के वैदिक मंत्र का जप करें. बुध के वैदिक मंत्र का जप करने से बुध के अशुभ प्रभाव कम होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी. बुध के इस मंत्र का जप आप प्रतिदिन एक माला सुबह अथवा संध्या समय में कर सकते हैं. स्वच्छ वस्त्र धारण करके स्वच्छ आसन पर बैठकर आप मंत्र जप करें। बुध का वैदिक मंत्र है :-

"ॐ उदबुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टापूर्ते सः ॐ सृजेथामयं च । अस्मिन्सधरथोयुत्तरस्मिन् विश्वे देवा यतमानश्च सीदत । बुधाय नमः"

(४) बुध के शुभ फल वृद्धि हेतु बुधवार के दिन व्रत रखकर गणेश जी की पूजा अर्चना कर सकते हैं. संध्या समय में भोजन करने से पहले गणेश जी के मंत्र का जप करें, मंत्र है :- "ॐ गं गणपतये नमः "

(५) बुध ग्रह से मामा, मौसी, बुआ आदि का विचार किया जाता है. इन्हें उचित मान-सम्मान दें. उनकी अवहेलना, अपमान या उपेक्षा नहीं करें. इनके प्रति अच्छे व्यवहार से बुध के शुभ फलों में वृद्धि होगी.

आप उपरोक्त उपायों में से अपनी सुविधानुसार किसी एक का अनुसरण श्रद्धा और भक्ति से करें.

### शुक्र के लिये उपाय

(२) आप शुक्र के अशुभ फल को कम करने तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए "शुक्र स्तोत्र" का जप कर सकते हैं. स्तोत्र का पाठ करने से शुक्र से सम्बन्धित जो भी अशुभ फल मिलने की संभावना है उसमें कमी आ सकती है. शुक्र के किसी भी मंत्र अथवा पाठ का आरम्भ शुक्ल पक्ष के बाद आने वाले शुक्रवार से करना चाहिए. पाठ या जप करते समय स्वच्छ वस्त्र धारण करें एवं स्वच्छ आसन पर बैठें. इस क्रिया



के दौरान मुख पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर रहना चाहिए.

(३) शुक्रवार के दिन आपको शुक्र के पौराणिक मंत्र का जप करना चाहिए. मंत्र का जप एक माला प्रतिदिन स्नान आदि से निवृत्त होकर करें. इससे स्वास्थ्य लाभ मिलेगा. शुक्र संबंधी विकारों में कमी आएगी. शुक्र का पौराणिक मंत्र है :-

“ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम । सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम ॥ ”

(४) आप शुक्रवार के दिन शुक्र के वैदिक मंत्र का जप कर सकते हैं. शुक्रवार के दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिए. स्वच्छ आसन अथवा कम्बल पर बैठकर प्रतिदिन एक माला का जप करें. जप करते समय आपका मुख उत्तर दिशा अथवा पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए. शुक्र का वैदिक मंत्र है :-

“ॐ अन्नात्सरिस्रतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत क्षत्रं पयः सोमं प्रजपतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपातं शुक्र मधसेइन्द्रस्येन्द्रिमिदं पयोमृतं मधु ॥ शुक्राय नमः”

(५) शुक्रवार के दिन व्रत रखें. संतोषी माता अथवा लक्ष्मी जी की पूजा, आराधना करें. व्रत रखने के बाद संध्या समय में विधिवत तरीके से पूजन करें और कथा सुनें या कथा स्वयं पढ़ें. व्रत करने से पहले आप संकल्प करें कि कितने समय तक आपको व्रत करना है. आप अपनी सुविधानुसार व्रत की संख्या चुन सकते हैं. शुक्रवार के दिन खीर बनाकर गरीब व्यक्तियों में बाँटें. एक आँख के व्यक्ति को शुक्रवार के दिन भोजन कराएं. इससे शुक्र के शुभ फलों में बढ़ोतरी होगी।

(६) शुक्र ग्रह से जीवनसाथी का विचार किया जाता है. आपको अपने जीवनसाथी को खुश तथा हर प्रकार से संतुष्ट रखना चाहिए. उनकी भावनाओं को सम्मान दें और स्नेह एवं सहयोग बनाये रखें. इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव में कमी आएगी.

अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार इन उपायों में से कोई भी उपाय आप कर सकते हैं.

### मंगल के लिये उपाय

(२) मंगल के शुभ फलों को बढ़ाने के लिए आपको मंगल ग्रह से संबंधित मंत्रों का जप करना चाहिए. मंगल से संबंधित मंत्रों का जप अथवा पाठ आप शुक्ल पक्ष के बाद आने वाले मंगलवार से आरम्भ करें. आप मंगल के शुभ फलों में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ प्रतिदिन संध्या समय में कर सकते हैं. इससे मंगल के अशुभ प्रभावों में कमी आएगी.

(३) आप मंगल ग्रह के पौराणिक मंत्र का जप भी कर सकते हैं. इस मंत्र का एक माला जप आपको प्रतिदिन संध्या समय में करना चाहिए. मंगल का पौराणिक मंत्र है :- “धरणीगर्भ संभूतम विद्युत्कांति समप्रभम । कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम ॥ ”  
इस मंत्र से मंगल से संबंधित दोषों में कमी आएगी।

(४) मंगल के वैदिक मंत्र का जप कर सकते हैं. इस मंत्र के जप की एक माला प्रतिदिन करें. इससे मंगल के दुष्प्रभाव कम होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी. इस मंत्र का जप संध्या समय में करना



चाहिए. मंगल का वैदिक मंत्र है :-

“ ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्योयम । अपामरेतांसि जिन्वति । भौमाय नमः ”

(५) मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको मंगलवार के दिन व्रत रखना चाहिए. व्रत रखकर संध्या समय में हनुमान जी की पूजा-अर्चना करें. संध्या समय में मंगलवार के दिन हनुमान जी को प्रसाद अर्पित करें तथा प्रसाद को छोटे बच्चों में बाँटें. शाम को भोजन में नमक का त्याग करें. मीठी खाएं.

(६) मंगल ग्रह से छोटे भाई-बहनों का विचार किया जाता है. आपके सहयोगी जो आपके अन्तर्गत कार्य करते हैं, उनका विचार भी मंगल से किया जाता है. मंगल के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए अपने छोटे भाई-बहनों तथा सहयोगियों से मधुरता से पेश आना चाहिए.

मंगल के इन उपायों में से अपनी सुविधानुसार कोई भी उपाय आप सकते हैं.

### बृहस्पति के लिये उपाय

(२) बृहस्पति ग्रह से शुभ फल पाने के लिए बृहस्पतिवार के दिन विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद होगा. इस पाठ का आरम्भ अथवा अन्य किसी जप का आरम्भ आपको शुक्ल पक्ष के पश्चात आने वाले बृहस्पतिवार से करना चाहिए. पाठ या जप करने से पहले अपने आपको शुद्ध कर लें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें. पाठ के समय मुंह पूर्व अथवा उत्तर दिशा में होना चाहिए. बैठने के लिए कुशा का आसन अथवा कम्बल प्रयोग कर सकते हैं.

(३) आप बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि के लिए गुरु के पौराणिक मंत्र का जप करें. इस मंत्र के जप की एक माला प्रतिदिन सुबह के समय करें. इससे गुरु से संबंधित विकारों में कमी आएगी। गुरु के शुभ फलों में वृद्धि होगी। गुरु का पौराणिक मंत्र है :-

“ देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥”

(४) आप बृहस्पति के वैदिक मंत्र का जप करें. इस मंत्र का जप आप प्रतिदिन सुबह के समय एक माला करें इससे स्वास्थ्य को अनुकूल रखने में बृहस्पति का योगदान प्राप्त होगा. मंत्र का जप स्वच्छ वस्त्र धारण करके, स्वच्छ आसन पर बैठकर करना चाहिए. गुरु का वैदिक मंत्र है :-

“ ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हादद्युमद्विभाति क्रषुतनेन्त यद्दी यद्दवसेश्रत प्रजातमदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ बृहस्पतये नमः”

एक वर्ष तक इस मंत्र का जप करने से ज्ञान की वृद्धि होगी.

(५) आप बृहस्पतिवार के दिन व्रत रखें। उस दिन पीले वस्त्र धारण करें। सुबह के समय स्नान आदि से निवृत्त होकर केले के वृक्ष की जड़ में जल दें और गुड़-चना व शुद्ध घी के दीपक से पूजन करें. संध्या समय में आप भोजन में चने या बेसन से बनी खाने की चीजें खाएं. भोजन में नमक का त्याग करें.

(६) गुरु ग्रह से परिवार के बड़े व्यक्तियों तथा गुरुजनों का विचार किया जाता है. आप अपने परिवार के सम्मानित व्यक्तियों और अपने गुरुजनों का आदर करें. उन्हें सम्मान तथा सत्कार दें. अपनी सेवा से उन्हें प्रसन्न रखें और स्नेहपूर्ण संबंध बनाये रखें. इनसे गुरु के शुभ फलों में वृद्धि होगी. गुरु संबंधी विकारों में कमी आएगी.



आप उपरोक्त उपायों में से अपनी सुविधानुसार कोई भी उपाय अपना सकते हैं।

### शनि के लिये उपाय

(२) शनि के शुभ फलों में वृद्धि के लिए प्रत्येक शनिवार को संध्या समय में "शनि नील स्तोत्र " अथवा " दशरथ कृत शनि स्तोत्र " का पाठ करना लाभप्रद होगा. इस पाठ से शनि के प्रभाव से होने वाले रोगों में कमी आएगी. मंत्र जप अथवा पाठ, शुक्ल पक्ष के बाद आने वाले शनिवार से आरम्भ करना चाहिए. संध्या समय में स्वच्छ आसन पर बैठें. इस क्रम में अपना मुख उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर रखें. इसके बाद एक माला शनि मंत्र का जप करना चाहिए.

(३) शनिवार के दिन संध्या समय में शनि के पौराणिक मंत्र का जप करें. इस मंत्र का जप करने से शनि के शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा शनि के दुष्प्रभाव में कमी आएगी. शनि का पौराणिक मंत्र है :-  
"नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम । छाया मार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम ॥ "

(४) शनि ग्रह के शुभ फलों को बढ़ाने के लिए आप शनि के वैदिक मंत्र का जप जप सकते हैं. इस मंत्र का जप प्रतिदिन एक माला संध्या समय में करना अच्छा रहेगा. इससे शनि के प्रभाव से होने वाली बीमारियों में कमी आएगी.

" ॐ शन्नो देवि रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शन्न्यो रभिस्त्रवन्तु नः ॥ शनैश्चराय नमः ।"

(५) शनिवार के दिन व्रत रख सकते हैं. इससे शनि के प्रभाव से होने वाले रोगों से मुक्ति मिल सकती है. व्रत करने के पश्चात संध्या समय में विधिवत तरीके से कथा पढ़ें तथा पूजन करें. पूजा के उपरान्त काली उड़द की दाल से बनी खिचड़ी का भोजन करें. शनिवार के दिन किसी लंगड़े व्यक्ति को भोजन कराएं. शनिवार के दिन खिचड़ी बनाकर गरीब व्यक्तियों में वितरित करा सकते हैं.

(५) शनिवार के दिन हनुमान जी की पूजा करना भी आपके लिए लाभप्रद हो सकता है. इससे आप स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

(६) शनि घर के वृद्ध तथा बुजुर्ग व्यक्ति, नौकर, गरीब व्यक्ति और कार्यालय में आपके अधीनस्थ कार्य करने वाले कर्मचारियों का कारक ग्रह है. आपको इन सभी के प्रति स्नेह तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए. इनके प्रति अच्छा व्यवहार शनि के कष्टकारी प्रभाव में कमी ला सकता है.

शनि ग्रह के इन उपायों में से अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार आप कोई भी उपाय आजमा सकते हैं.

### चंद्र के लिये उपाय

(२) आप चन्द्रमा से संबंधित रोगों से निजात पाने के लिए चन्द्रमा के मंत्र का जप करें. चन्द्रमा के किसी भी पाठ अथवा मंत्र का जप आप शुक्ल पक्ष के सोमवार से अथवा पूर्णिमा से आरम्भ करें. जप या पाठ सोमवार को सायंकाल में शुद्ध वस्त्र धारण करने के बाद स्वच्छ आसन पर बैठकर करना चाहिए. आपका मुँह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए. चन्द्रमा का वैदिक मंत्र है :-

" ॐ इमं देवा, असपत्न सुवंगं, बध्व महते, क्षत्राय महते, ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्रिस्येन्द्रियाय ।  
इमममुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्रमस्यै विशेषे वोसी राजा सोमोस्मांक ब्राह्मणानां ॐ राजा । चन्द्राय नमः ।"

चन्द्रमा के इस मंत्र का जप प्रतिदिन संध्या समय एक माला करें. चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि होगी.



(३) चन्द्रमा के नमस्कार मंत्र का जप भी आपके लिए बहुत लाभदायक रहेगा. इससे चन्द्रमा के अशुभ प्रभाव में वृद्धि होगी. चन्द्रमा का नमस्कार मंत्र है :- " दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदारणव संभवम। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम ॥ "

(४) चन्द्रमा के शुभ प्रभाव में वृद्धि के लिए प्रत्येक मास की पूर्णिमा को आप व्रत रखकर सत्यनारायण भगवान की पूजा कर सकते हैं. इससे चन्द्रमा को बल मिलेगा जिससे अशुभ प्रभाव कम होगा. चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि होगी. प्रत्येक सोमवार को शिव भगवान की पूजा करने से भी चन्द्रमा के शुभ फलों में बढ़ोतरी होगी।

(५) चन्द्रमा से माता अथवा माता समान स्त्री का विचार किया जाता है. आप अपनी माता का आदर करें तथा उनके मान-सम्मान को ठेस ना पहुंचाएं. अपनी माता और माता समान स्त्रियों को आदर दें. माता का आदर करने से चन्द्रमा के दोषों में कमी आएगी तथा शुभ फल में वृद्धि होगी.

आप उपरोक्त उपायों में से अपनी सुविधानुसार किसी एक उपाय को अपना सकते हैं.

### राहु के लिये उपाय

(२) राहु के मंत्र का जप शनिवार के दिन सूर्यास्त के बाद करना चाहिए. शनिवार को सूर्यास्त के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें. स्वच्छ आसन पर उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें और राहु के पौराणिक मंत्र का जप करें. इससे राहु से होने वाली व्याधि से राहत मिलेगी. राहु का पौराणिक मंत्र है :-

"अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम। सिंहिका गर्भं संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम ॥ "

(३) राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए वैदिक मंत्र का भी जप कर सकते हैं. शनिवार को सूर्यास्त के बाद प्रतिदिन एक माला जप करें. राहु का वैदिक मंत्र है :-

" ॐ कयानश्चित्रेऽभुवदूती सदावृधः सखा । कयाशचिष्ठया वृता । राहवे नमः ।

(४) राहु से गरीब एवं दुर्बल व्यक्तियों का विचार किया जाता है. आपको अपनी क्षमतानुसार इन सभी लोगों की सहायता करनी चाहिए. कुष्ठरोगियों के आश्रम में जाकर उनकी आवश्यकता की वस्तुओं का वितरण करें. रोगी तथा पीड़ाग्रस्त व्यक्ति की सेवा करें. इससे राहु के दुष्परिणामों में कमी आएगी. राहु ग्रह दादा, दादी का भी कारक है. अपने दादा-दादी की सेवा एवं सम्मान करें। इससे भी राहु ग्रह के शुभ प्रभाव में वृद्धि होगी.

राहु ग्रह के इन उपायों में से अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार आप कोई भी उपाय आजमा सकते हैं.

### केतु के लिये उपाय

(२) केतु के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आप केतु के पौराणिक मंत्र का जप कर सकते हैं. केतु के मंत्र का एक माला जप मंगलवार अथवा शनिवार की रात्रि में सूर्यास्त के पश्चात करें. स्वच्छ वस्त्र धारण करें तथा स्वच्छ आसन पर बैठकर उत्तर अथवा पूर्व की ओर मुख करके जप करना चाहिए. इस मंत्र के जप से केतु से होने वाले शारीरिक कष्टों में कमी आएगी. केतु का पौराणिक मंत्र है :-

" पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम ॥ "

(३) केतु के शुभ फल हेतु शनिवार अथवा मंगलवार के दिन सूर्यास्त के पश्चात केतु के वैदिक मंत्र का



भी जप किया जा सकता है. केतु का मंत्र है:- " ॐ केतुं कृष्णन् केतवे मर्याअपेशसे समुंषदिरजार्यथा । केतवे नमः ॥ "

प्रतिदिन इस मंत्र का एक माला जप आपके लिए लाभप्रद होगा. इसके अतिरिक्त केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए आप गजेन्द्र मोक्ष का पाठ कर सकते हैं.

(४) दुर्बल, दीन, दुःखी तथा अभावग्रस्त युवक तथा युवतियों का कारक ग्रह केतु है. इनकी सहायता करने से केतु के दुष्परिणामों में कमी आ सकती है. परिवार में नाना-नानी का कारक ग्रह भी केतु है. आपको इनका निरादर नहीं करना चाहिए. इन्हें मान-सम्मान दें और इनकी सेवा करें. इससे केतु के शुभ फलों में वृद्धि होगी.

केतु ग्रह के इन उपायों में से अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार आप कोई भी उपाय कर सकते हैं.

### महामृत्युंजय मंत्र

किसी भी प्रकार का शारीरिक कष्ट हो उससे जल्दी राहत पाने के लिए प्रतिदिन शिवलिंग पर जल चढ़ाना और महामृत्युंजय मंत्र का जप करना लाभप्रद होता है. इससे असाध्य तथा कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है. प्रतिदिन श्रद्धा तथा भक्तिपूर्वक एक माला सुबह अथवा शाम में महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए.

" ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ "

रोग नाश के लिए मंत्र  
रोगानशेषान पहंसि तुष्टा  
रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान  
त्वमाश्रितानां न विपन्नराणां  
त्वामाश्रिता हयाश्रयतां प्रयान्ति ।

स्नानादि से निवृत्त होकर प्रतिदिन इस मंत्र का तीन माला जप करने से रोग से जल्दी मुक्ति मिलती है. इस मंत्र जप से रोग से बचाव भी होता है.

= नारद पुराण में रोग तथा शोक से मुक्ति पाने के लिए कुछ मंत्र दिए गए हैं. आप इन मंत्र में से किसी भी मंत्र का जप सुबह के समय स्नानादि से निवृत्त होकर शुभ घड़ी में आरम्भ कर सकते हैं. इससे शारीरिक कष्टों से राहत मिलेगी. प्रतिदिन एक माला जप करें. मंत्र हैं :-

(२) " ॐ नमो नारायणाय "

(३) " ॐ नमो भगवते वासुदेवाय "

(४) " श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा "

### वृक्षारोपण द्वारा उपाय



जातक विशेष की कुण्डली में स्वास्थ्य से संबंधित कई पहलुओं पर विचार किया जाता है। व्यक्ति का स्वास्थ्य कैसा रहेगा। यह जानने के लिए लग्न, लग्नेश, ग्रह, भाव, दशा, गोचर आदि के विषय में सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त जातक की कुण्डली में जन्म नक्षत्र का आंकलन भी किया जाता है। यदि कुण्डली में जन्म नक्षत्र पीड़ित है तब स्वास्थ्य संबंधी मानसिक अथवा शारीरिक परेशानियाँ जातक को घेरे रह सकती हैं।

जन्म नक्षत्र को बल प्रदान करने के लिए कई तरह के उपाय किए जाते हैं। उसे बली बनाने के लिए मंत्र जाप अथवा पीड़ित नक्षत्र से संबंधित दान आदि भी किए जाते हैं। कई शास्त्रों में पीड़ित नक्षत्र के संबंध में वृक्षारोपण के विषय में भी बताया गया है। व्यक्ति अपने जन्म नक्षत्र से संबंधित पौधे को लगाता है तो उसे अनुकूल तथा शुभ फलों की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है। घर में सुख-शांति बनी रहती है। मानसिक सुख में वृद्धि होती है। इसलिए जन्म नक्षत्र से संबंधित पौधा योग्य भूमि में अवश्य लगाना चाहिए।

### धनिष्ठा